ज़मीन साकिन है!

इमामे अहले सुन्नत, आला हज़रत,
इमाम अहमद रज़ा खान رحمۃ اللہ علیہ

हिंदी :
नबीरा -ए- आला हज़रत, शहज़ादा -ए- क़मरुल उलमा
मौलाना उमर रज़ा ख़ान क़ादरी नूरी बरेलवी

इमामे अहले सुन्नत, आला हज़रत,
इमाम अहमद रज़ा खान رحمة الله عليه

हिंदी :

नबीरा -ए- आला हज़रत, शहज़ादा -ए- क़मरुल उलमा
मौलाना उमर रज़ा खा़न क़ादरी नूरी बरेलवी

بسم اللہ الرحمن الرحیم ۔ نحمدہ و نصلی علی رسولہ الکریم ۔

मसअला 31 : अज़ मोती बाज़ार लाहौर, मसअला मौलवी हाकिम अली साहिब, 14 जुमादल ऊला 1339 हिजरी _

یا سیدی اعلی حضرت سلمکم اللہ تعالی ۔ السلام علیکم و رحمۃ اللہ و برکاتہ ۔ اما بعد ھذا من تفسیر جلالین)اِنَّ اللّٰہَ یُمْسِکُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ اَنْ تَزُوْلَا (ای یمنعھما من الزوال و ایضا)اَوَلَمْ تَکُوْنُوْا اَقْسَمْتُمْ (حلفتم)مِنْ قَبْلُ (فی الدنیا)مَا لَکُمْ مِنْ (زائدۃ)زَوَالٍ (عنھا لِتَزُوْلَ مِنْہُ) الی الاخرۃ و ایضا)وَ اِنْ (ما)کَانَ مَکْرُھُمْ (و ان عظم الْجِبَالُ (المعنی لا یعبأ بہ و لا یضر الا انفسھم و المراد بالجبال ھنا قیل حقیقتاً و قیل شرائع الاسلام المشبھۃ بھا فی القراء و الثبات و فی قراءۃ بفتح لام لتزول و رفع الفعل فان مخففۃ و المراد)عہ (تعظیم مکرھم و قیل المراد بالمکر کفرھم و یناسبہ علی الثانیۃ تکاد السمٰوٰت یتفطرن منہ و تنشق الارض و تخر الجبال ھدا و علی الاول ما قرئ و ما کان ۔ و سردار من دامت برکاتکم و این است از تفسیر حسینی)اِنَّ اللّٰہَ (بدرستیکہ خدائے تعالی)یُمْسِکُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ(نگاہ می دارد آسمانہا و زمین را)اَنْ تَزُوْلَا (برائے آنکہ زائل نہ شوند از اماکن خود چہ ممکن را در حال بقا ناچار است از نگاہ دارندہ آوردہ اند کہ چوں یہود و نصاری عزیر و عیسی را بفرزندی حق سبحنہ

نسبت کردند آسمان و زمین نزدیک بآں رسید کہ شگافتہ گردد حق تعالیٰ فرمود کہ من بقدرت نگاہ می دارم ایشاں را تا زوال نیابند یعنی از جائے خود نروند ایضاً (اَوَلَمۡ تَكُوۡنُوۡا) در جواب ایشاں گویند فرشتگان آیا نبودید شما کہ از روئے مبالغہ (اَقۡسَمۡتُمۡ مِّنۡ قَبۡلُ) سوگند می خوردید پیش ازیں در دنیا کہ شما پایندہ و خوابیدہ بودید (مَا لَكُمۡ مِّنۡ زَوَالٍ) نباشد شمارا ہیچ زوالے مراد آنست کہ می گفتند کہ ما در دنیا خواہیم بود و بسرائے دیگر نقل نخواہیم نمود و ایضاً (وَ اِنۡ كَانَ مَكۡرُهُمۡ) و بدرستیکہ بود مکر ایشاں در سختی و ہول ساختہ پرداختہ (لِتَزُوۡلَ) تا از جائے برود (مِنۡهُ الۡجِبَالُ) زاں مکر کوہ ہا۔

महबूब व मुहिब ए फ़कीर

ایدکم اللہ تعالیٰ فی کل حال ۔

जब काफ़िरों के ज़वाल के माना उनका इस दुनया से दारुल आख़िरत में जाना मुसल्लम हुआ तो मुआमला साफ़ हो गया क्योंकि काफ़िर ज़मीन पर फिरते चलते हैं, इस फिरने चलने का नाम ज़वाल न हुआ कि यह उनका चलना फिरना अपने अमाकन में है कि जहाँ तक अल्लाह तआला ने उनको हरकत करने का इमकान दिया है वहाँ तक उनका हरकत करना उनका ज़वाल न हुआ यही हाल पहाड़ों का हुआ कि उनका अपने अमाकन से ज़ाइल हो जाना उनका ज़वाल हुआ। जब यह हाल है तो ज़मीन का भी अपने अमाकन से ज़ाइल हो

जाना उसका ज़वाल होगा और अपने अमाकन में उसका हरकत करना ज़वाल नहीं हो सकता। शुक्र है उस परवरदिगार का कि किसी सहाबी रदि

عه : و المعنى و لان كان مكرهم من الشدة بحيث تزول عنها الجبال و تنقطع عن اماكنها ـ ۱۲ كمالين ـ

अल्लाहु तआला अन्हु से भी मुझे गुरेज़ न हुआ और मेरी मुश्किल भी अज़ बारगाह ए हल्लिल मुश्किलात हल हो गई ब बरकत ए कलाम ए करीम,

وَ مَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ـ وَ يَرزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحتَسِبُ ـ

और यह इस तरह हुआ कि हज़रत अब्दुल्लाह इब्न ए मसऊद रदि अल्लाहु तआला अन्हु ने आसमान के सुकून फ़ी मकान की तसरीह फ़रमा दी मगर ज़मीन के बारे में ऐसा न फ़रमाया यानी आसमान की तसरीह की तरह तसरीह न फ़रमाई यानी ख़ामोशी फ़रमाई, क़ुरबान जाऊँ अहसनुल ख़ालिक़ीन तबारक व तआला के और बाइस ख़ल्क़ ए आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के और हज़रत मुअल्लिमुत तहियात रदि अल्लाहु तआला अन्हु के कि साइंस की सरकोबी के लिए ज़मीन के ज़वाल उसके अमाकन से के माना आपके इस ताबेदार मुजाहिद ए कबीर पर अयाँ फ़रमाए कि ज़मीन के ज़वाल न करने के यह माना हैं कि जिन अमाकन में अल्लाह तआला ने उसको इमसाक किया है उससे यह बाहर नहीं सरक सकती मगर उन अमाकन में उसको हरकत ए अम्र करदा शुदा अता फ़रमाई हुई है जैसे कि उस पर काफ़िर चलते फिरते हैं और यह उनका ज़वाल नहीं है इसी तरह से

अपने मदार में और सूरज की हमराही में इमसाक करदा शुदा है और जाज़िबा और रफ़्तार क्या है सिर्फ़ अल्लाह पाक के इमसाक का एक ज़ुहूर है और कुछ नहीं, अब चाहें तो जाज़िबा और रफ़्तार दोनों को मादूम कर दें और हर चीज़ को उसके हय्यिज़ में साकिन फ़रमा दें, उससे ज़ाइल नहीं हो सकती जैसे कि सूरज,

وَ الشَّمۡسُ تَجۡرِیۡ لِمُسۡتَقَرٍّ لَّهَا ۔

की रू से अपने मजरे में इमसाक किया गया हुआ है और अपने मजरे में चल रहा है मगर उसके इस चलने का नाम ज़वाल नहीं बल्कि जरयान है तो ज़मीन का भी अपने मदार में और सूरज की हमराही में चलना उसका जरयान है न कि ज़वाल।

ذٰلِكَ فَضۡلُ اللّٰهِ يُؤۡتِيۡهِ مَنۡ يَّشَآءُ فالحمد لله رب العٰلمين و الشكر و المنة

ग़रीब नवाज़ करम फ़रमा कर मेरे साथ मुत्तफ़िक़ हो जाओ तो फिर इन शा' अल्लाह तआला साइंस को और साइंसदानों को मुसलमान किया हुआ, हाँ

اَلَمۡ نَجۡعَلِ الۡاَرۡضَ مِهٰدًا

के बजाए

الَّذِیۡ جَعَلَ لَكُمُ الۡاَرۡضَ مَهۡدًا الخ جـ ع آيه ۰

दर्ज फ़रमा दें दीबाचा में, सबको सलाम मसनून क़बूल होवे।

अलजवाब :

بسم اللہ الرحمن الرحیم الحمد للہ الذی بامرہ قامت السماء و الارض و الصلوۃ و السلام علی شفیع یوم العرض و اٰلہ و صحبہ و ابنہ و حزبہ اجمعین امین ۔

मुजाहिद ए कबीर, मुख़लिस ए फ़कीर, हक़ तलब, हक़ पज़ीर,

سلمہ اللہ القدیر و علیکم السلام و رحمۃ اللہ و برکاتہ ۔

दसवां दिन है आपकी रजिस्ट्री आई, मेरी ज़रुरी किताब कि तबअ हो रही है उसकी अस्ल के सफ़हा 1088 तक किताब लिख चुके और सफ़हा 1090 के बाद से मुझे तक़रीबन चालीस सफ़हा के क़दर मज़ामीन बढ़ाने की ज़रूरत महसूस हुई, यह मबाहिस ए जलीला दक़ीक़ा पर मुशतमिल थी, मैंने उनकी तकमील मुक़द्दम जानी कि तबअ जारी रहे, इधर तबियत की हालत आप ख़ुद मुलाहज़ा फ़रमा गए हैं वही कैफ़ियत अब तक है, अब भी उसी तरह चार आदमी कुर्सी पर बिठाकर मस्जिद को ले जाते, लाते हैं, ऊन औराक़ की तहरीर और उन मबाहिस ए जलील ग़ामिज़ा की तनक़ीह व तक़रीर से बिहम्दिहि तआला रात फ़ारिग़ हुआ और आपकी महब्बत पर इत्मिनान था कि इस ज़रूरी दीनी काम की तक़दीम को नागवार न रखेंगे, आपने अपना लक़ब मुजाहिद ए कबीर रखा है मगर मैं तो अपने तज्रिबे से आपको मुजाहिद ए अकबर कह सकता हूँ। हज़रत मौलाना अल असदुल असदुल अशद मौलवी मुहम्मद वसी अहमद साहिब मुहद्दिस सूरती

रहमत उल्लाह अलैहि का लहजा जल्द से जल्द हक़ क़बूल कर लेने वाला मैंने आपकी बराबर न देखा, अपने जमे हुए ख़याल से फ़ौरन हक़ की तरफ़ रुजू ले आना जिसका मैं बारहा आपसे तज्रिबा कर चुका नफ़्स से जिहाद है और नफ़्स से जिहाद, जिहाद ए अकबर है तो आप इसमें मुजाहिद ए अकबर हैं,

بارك الله تعالى و تقبل امين ۔

उम्मीद है कि बि औनिहि तआला इस मसअला में भी आप ऐसा ही जल्द अज़ जल्द क़बूल ए हक़ फ़रमाएंगें कि बातिल पर एक आन के लिए भी इसरार मैंने आपसे न देखा, व लिल्लाहिल हम्द।

इस्लामी मसअला यह है कि ज़मीन व आसमान दोनों साकिन हैं, कवाकिब चल रहे हैं,

كُلٌّ فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ۔

हर एक एक फ़लक में तैरता है जैसे पानी में मछली। अल्लाह तआला अज़्ज़ा व जल्ल का इरशाद आपके पेश ए नज़र है,

اِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ اَنْ تَزُوْلَا وَ لَئِنْ زَالَتَآ اِنْ اَمْسَكَهُمَا مِنْ اَحَدٍ مِنْ بَعْدِهٖ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ۔

मैं यहाँ अव्वलन इज्मालन चंद हर्फ़ गुज़ारिश करूँ कि इन शा' अल्लाह तआला आपकी हक़ पसंदी को वही काफ़ी हो फिर क़दरे तफ़सील। इज्माल यह कि

افقه الصحابة بعد الخلفاء الاربعه ۔

सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्न ए मसऊद व साहिब ए सिर्र ए रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हज़रत हुज़ैफ़ा इब्नुल यमान रदि अल्लाहु तआला अन्हु ने इस आयत ए करीमा से मुतलक़ हरकत की नफ़ी मानी यहाँ तक कि अपनी जगह क़ाइम रहकर मिहवर पर घूमने को भी ज़वाल बताया (देखिए नम्बर 2) हज़रत इमाम अबू मालिक ताबई सिक़ा जलील तलमीज़ ए हज़रत अब्दुल्लाह इब्न ए अब्बास ने ज़वाल को मुतलक़ हरकत से तफ़सीर किया (देखिए आख़िर नम्बर 2) इन हज़रात से ज़ाइद अरबी ज़बान व मआनी क़ुरआन समझने वाला कौन। अल्लामा निज़ामुद्दीन हसन निशापुरी ने तफ़सीर रग़ाइबुल फ़ुरक़ान में इस आयत ए करीमा की यह तफ़सीर फ़रमाई,

اَنْ تَزُوْلَا (کراھة زوالھما عن مقرھما و مرکزھما ۔)

यानी अल्लाह तआला आसमान व ज़मीन को रोके हुए है कि कहीं अपने मक़र से हट न जाएं। मक़र ही काफ़ी था कि जा ए फ़िरार व हराम है, क़रार सुकून है, मुनाफ़ी ए हरकत। क़ामूस में आता है,

قر سکن ۔

मगर उन्होंने इस पर इक्तिफ़ा न किया बल्कि इसका अत्फ़ ए तफ़सीरी मरकज़हुमा ज़ाइद किया, मरकज़ जा ए रक्ज़, रक्ज़ गाड़ना, जमाना, यानी आसमान व ज़मीन जहाँ जमे हुए, गड़े हुए हैं, वहाँ से न सरकें।

नीज़ ग़राइबुल फ़ुरक़ान में ज़ेर ए क़ौलिही तआला,

اَلَّذِیْ جَعَلَ لَکُمُ الْاَرْضَ فِرَاشًا ۔

फ़रमाया,

لا يتم الافتراش عليها ما لم تكن ساكنة و يكفى فى ذلك ما اعطاها خالقها و ركز فيها من الميل الطبيعى الى الوسط الحقيقى بقدرته و اختيار بِاِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ اَنْ تَزُوْلَا ۔

इसी आयत के नीचे तफ़सीर ए कबीर इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी में है,

اعلم ان كون الارض فراشا مشروط بكونها ساكنة فالارض غير متحركة لا بالاستدارة و لا بالاستقامة و سكون الارض ليس الا من الله تعالى بقدرته و اختياره و لهذا قال الله تعالى اِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ اَنْ تَزُوْلَا ۔ اه ملتقطا ۔

क़ुरआन ए अज़ीम के वही माना लेने हैं जो सहाबा व ताबाईन व मुफ़स्सिरीन मोतमदीन ने लिए, इन सबके ख़िलाफ़ वह माना लेना जिनका पता नसरानी साइंस में मिले मुसलमान को कैसे हलाल हो सकता है। क़ुरआन ए करीम की तफ़सीर बिर राए अशद कबीरा है जिस पर हुक्म है,

فليتبوأ مقعده من النار ۔

वह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले। यह तो इससे भी बढ़कर होगा कि क़ुरआन ए मजीद की तफ़सीर अपनी राए से भी नहीं बल्कि राए नसारा के मुवाफ़िक़ वल इयाज़ु बिल्लाहि। यह हुज़ैफ़ा इब्नुल

यमान रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा वह सहाबी जलीलुल क़द्र हैं जिनको रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपने असरार सिखाए, उनका लक़ब ही साहिब ए सिर ए रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम है, अमीरुल मोमिनीन फ़ारुक़ ए आज़म रदि अल्लाहु तआला अन्हु उनसे असरार ए हुज़ूर की बातें पूछते और अब्दुल्लाह तो अब्दुल्लाह हैं, रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हुक्म फ़रमाया कि यह जो फ़रमाएं उसे मज़बूत थामो,

تمسکوا بعهد ابن مسعود ۔

और एक हदीस में इरशाद है,

رضیت لامتی ما رضی لها ابن ام عبد و کرهت لامتی ما کره لها ابن ام عبد ۔

मैंने अपनी उम्मत के लिए पसंद फ़रमाया जो उसके लिए अब्दुल्लाह इब्न ए मसऊद पसंद करें और मैंने अपनी उम्मत के लिए नापसंद रखा जो उसके लिए इब्न ए मसऊद नापसंद रखें। और ख़ुद उनके इल्म ए क़ुरआन को इस दर्जा तरजीह बख़्शी कि इरशाद फ़रमाया,

استقرأوا القرآن من اربعة من عبد الله ابن مسعود، الحدیث

क़ुरआन चार शख़्सों से पढ़ो, सबमें पहले अब्दुल्लाह इब्न ए मसऊद का नाम लिया। यह हदीस सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम में

ब रिवायत ए अब्दुल्लाह इब्न ए उमर रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा हज़रत अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम है। और अजाइब ए नामाए इलाहीया से यह कि आयत ए करीमा,

اَنْ تَزُوْلَا

की यह तफ़सीर और यह कि मिहवर पर हरकत भी मौजिब ए ज़वाल है चे जाए हरकत अलल मदार, हमने दो सहाबी जलीलुल क़द्र रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत की, दोनों की निस्बत हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि यह जो बात तुमसे बयान करें उसकी तसदीक़ करो। दोनों हदीसें जामेअ तिर्मिज़ी शरीफ़ की हैं, अव्वल,

ما حدثكم ابن مسعود فصدقوه ۔

दुवम

ما حدثكم حذيفة فصدقوه ۔

अब यह तफ़सीर इन दोनों हज़रात की नहीं बल्कि रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि इसे मानो, इसकी तसदीक़ करो।

الحمد لله تعالى رب العالمين ۔

हमारे माना की तो यह अज़मत ए शान है कि मुफ़स्सिरीन से साबित, ताबाईन से साबित, अजिल्ला ए सहाबा ए किराम से साबित, ख़ुद हुज़ूर सय्यिदुल अनाम अलैहि अफ़ज़लुस सलातो वस्सलाम से

इसकी तसदीक़ का हुक्म। और अनक़रीब हम बि फ़ज़्लिहि तआला और बहुत आयात और सदहा अहादीस और इज्मा ए उम्मत और ख़ुद इक़रार ए मुजाहिद ए कबीर से इस माना की हक़ीक़त और ज़मीन का सुकून ए मुतलक़ साबित करेंगे। व बिल्लाहित तौफ़ीक़।

आपने जो माना लिए क्या किसी सहाबी, किसी ताबई, किसी इमाम, किसी तफ़सीर या जाने दीजिए छोटी सी छोटी किसी इस्लामी आम कुतुब में दिखा सकते हैं कि आयत के माना यह हैं कि ज़मीन गिर्द ए आफ़ताब दौरा करती है, अल्लाह तआला उसे सिर्फ़ इतना रोके हुए है कि इस मदार से बाहर न जाए लेकिन उस पर उसे हरकत करने का अम्र फ़रमाया है। हाशा लिल्लाह किसी इस्लामी रिसाला, पर्चे, रुक़्क़ा से इसका पता नहीं दे सकते सिवा साइंस ए नसारा के। आगे आप इंसाफ़ कर लेंगे कि मआनी क़ुरआन वह लिए जाएं या यह। मुहिब्बा, मुख़लिसा! वह कौन सा नस है जिसमें कोई तावील नहीं गढ़ सकते यहाँ तक कि क़ादियानी काफ़िर ने,

وَ خَاتَمَ النَّبِيِّنَ

में तावील गढ़ दी कि रिसालत की अफ़ज़लियत उन पर ख़त्म हो गई, उन जैसा कोई रसूल नहीं। नानोतवी ने गढ़ दी कि वह नबी बिज़्ज़ात हैं और नबी बिल अर्ज़, और मौसूफ़ बिल अर्ज़ का क़िस्सा मौसूफ़ बिज़्ज़ात पर ख़त्म हो जाता है उनके बाद भी अगर कोई नबी हो तो ख़त्म ए नुबूवत के ख़िलाफ़ नहीं। हत्ता कि यूँही कोई मुशरिक ला इलाहा इल्लल्लाह में तावील कर सकता है कि आला में हस्र है यानी अल्लाह के बराबर कोई ख़ुदा नहीं अगरचे उससे छोटे बहुत से हों। जैसे हदीस शरीफ़ में है,

لا فتی الا علی لا سیف الا ذو الفقار ۔

दूसरी हदीस

لا وجع الا وجع العین و لا هم الا هم الدین ۔

दर्द नहीं मगर आँख का दर्द और परीशानी नहीं मगर क़र्ज़ की परीशानी। ऐसी तावीलों पर ख़ुश न होना चाहिए बल्कि जो तफ़सीर मासूर है उसके हुज़ूर सर पर रख दिया जाए और जो मसअला तमाम मुसलमानों में मशहूर व मक़बूल है मुसलमान उसी पर ऐतिक़ाद लाए।

मुहिब्बी मुख़लिसी! अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने आपको पक्का मुस्तक़िल सुन्नी किया है, आप जानते हैं कि आपसे पहले राफ़ज़ी जो मुरतद न थे काहे से राफ़ज़ी हुए। क्या अल्लाह या क़ुरआन या रसूल या क़यामत वग़ैरहा ज़रुरियात ए दीन से किसी के मुंकिर थे। हरगिज़ नहीं, उन्हें इसने राफ़ज़ी किया कि सहाबा ए किराम रदि अल्लाहु तआला अन्हुम की अज़मत न की। मुहिब्बा! दिल को सहाबा की अज़मत से ममलू कर लेना फ़र्ज़ है, उन्होंने क़ुरआन ए करीम साहिब ए क़ुरआन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से पढ़ा, हुज़ूर से उसके मआनी सीखे, उनके इरशाद के आगे अपनी फ़हम नाक़िस की। वह निस्बत समझनी भी ज़ुल्म है जो एक अल्लामा मुतबह्हर के हुज़ूर किसी जाहिल गंवार बे तमीज़ को। मुहिब्बा! सहाबा और ख़ुसूसन हुज़ैफ़ा व अब्दुल्लाह इब्न ए मसऊद जैसे सहाबा की यह क्या अज़मत हुई अगर हम ख़याल करें कि जो माना ए क़ुरआन ए अज़ीम उन्होंने समझे ग़लत हैं, हम जो समझे वह सहीह हैं। मैं आपको अल्लाह अज़्ज़ा

व जल्ल की पनाह में देता हूँ इससे कि आपके दिल में ऐसा ख़तरा भी गुज़रे।

فَاللّٰهُ خَيْرٌ حٰفِظًا وَّ هُوَ اَرحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ۔

मैं उम्मीद ए वासिक़ रखता हूँ कि इसी क़द्र इज्माल ए जमील आपके इंसाफ़ ए जज़ील को बस। अब क़दर ए तफ़सील भी अर्ज़ करूं।

(1) ज़वाल के अस्ल माना सरकना, हटना, जाना, हरकत करना, बदलना हैं। क़ामूस में है,

الزوال الذهاب و الاستحالة ۔

उसी में है,

كل ما تحول فقد حال و استحال ۔

एक नुस्ख़ा में है,

كل ما تحرك او تغير ۔

यूँही उबाब में है,

تحول او تحرك ۔

ताजुल उरूस में है,

ازال الله تعالى زواله اى اذهب الله حركته و زال زواله اى ذهبت حركته ۔

निहाया इब्न ए असीर में है,

في حديث جندب الجهني و الله لقد خالطه سهمى و لو كان زائلة لتحرك الزائلة كل شيئ من الحيوان يزول عن مكانه و لا يستقر و كان هذا المرمى قد سكن نفسه لا يتحرك لئلا يحس به فيجهز عليه ۔

(अ) देखो ज़वाल ब माना हरकत है और क़ुरआन ए अज़ीम ने आसमान व ज़मीन से उसकी नफ़ी फ़रमाई तो हरकत ए ज़मीन व हरकत ए आसमान दोनों बातिल हुईं।

(ब) ज़वाल जाना और बदलना है, हरकत मिहवरी में बदलना है और मदार पर हरकत में जाना भी तो दोनों की नफ़ी हुई।

(ज) नीज़ निहाया व दुर ए नसीर इमाम जलालुद्दीन सुयूती में है,

الزويل الانزعاج بحيث لا يستقر على المكان و هو و الزوال بمعنى واحد ۔

क़ामूस में है,

زعجه و اقلقه و قلعه من مكانه كازعجه فانزعج ۔

लिसान में है,

الازعاج نقيض الاقرار ۔

ताज में है,

قلق الشیئ قلقاً و ھوان لا یستقر فی مکان واحد ۔

मुफ़रदात ए इमाम राग़िब में है,

قر فی مکانه یقر قراراً ثبت ثبوتاً جامداً واصله من القر و هو البرد و هو یقتضی السکون و الحر یقتضی الحرکة ۔

क़ामूस में है,

قر بالمکان ثبت و سکن کاستقر ۔

देखो ज़वाल इंज़आज है और इंज़आज क़लक़ मुक़ाबिल ए क़रार और सुकून हो तो ज़वाल मुक़ाबिल ए सुकून है और मुक़ाबिल ए सुकून नहीं मगर हरकत तो हरकत ज़वाल है। क़ुरआन ए अज़ीम आसमान व ज़मीन के ज़वाल से इंकार फ़रमाता है, ला जरम उनकी हर गूना हरकत की नफ़ी फ़रमाता है।

(द) सराह में है,

زائله جنبیده و رونده و آئنده ۔

ज़मीन अगर मिहवर पर हरकत करती जंबीदा होती और मदार पर तो आइंदा व रविंदा भी बहरहाल ज़ाइला होती और क़ुरआन ए अज़ीम उसके ज़वाल को बातिल फ़रमाता है, ला जरम उससे हर नौए हरकत ज़ाइल।

(2) करीमा

وَ اِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُوْلَ مِنْهُ الْجِبَالُ ۔

उनका मकर इतना नहीं जिससे पहाड़ जगह से टल जाएं या अगरचे उनका ऐसा बड़ा हो कि जिससे पहाड़ टल जाएं। यह क़तअन हमारी ही मुअय्यद और हर गूना हरकत ए जिबाल की नफ़ी है।

(अ) हर आक़िल बल्कि ग़बी तक जानता है कि पहाड़ साबित साकिन व मुसतक़र एक जगह जमे हुए हैं जिनको असलन जुंबिश नहीं। तफ़सीर इनायतुल काज़ी में है,

ثبوت الجبل یعرفه الغبی و الذکی ۔

क़ुरआन ए अज़ीम में उनको रवासी फ़रमाया, रासी एक जगह जमा हुआ पहाड़, अगर एक उंगल भी सरक जाएगा क़त्अन ज़ालल जबल सादिक़ आएगा न यह कि तमाम दुनया में लुढ़कता फिरे और ज़ालुल जबल न कहा जाए, सबात व क़रार साबित रहे कि अभी दुनया से आख़िरत की तरफ़ गया ही नहीं ज़वाल कैसे हो गया। अपनी मनक़ूला इबारत ए जलालैन देखिए पहाड़ के इसी सबात व इसतिक़रार पर शराए इस्लाम को उससे तशबीह दी जिनका ज़र्रा भर हिलाना मुमकिन नहीं।

(ब) इसी इबारत ए जलालैन का आख़िर देखिए कि तफ़सीर ए दुवम पर यह आयत,

آیه تَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا

के मुनासिब है यानी उनकी मलऊन बात ऐसी सख़्त है जिससे क़रीब था कि पहाड़ ढहकर गिर पड़ते। यूँही मुआलिमुत तन्ज़ील में है,

و هو معنی قوله تعالی وَ تَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ۔

यह मज़मून अबू उबैद व इब्न ए जरीर व इब्नुल मुंज़िर व इब्न ए अबी हातिम ने अब्दुल्लाह इब्न ए अब्बास रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत किया नीज़ इब्न ए जरीर दिहाक से रावी हुए

كقوله تعالى وَ تَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ۔

इसी तरह क़तादा शागिर्द ए अनस रदि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया। ज़ाहिर है कि ढहकर गिरना उस जंगल से भी उसे न निकाल देगा जिसमें था न कि दुनया से, हाँ जमा हुआ साकिन मुसतक़र न रहेगा तो इसी को ज़वाल से ताबीर फ़रमाया और इसी की नफ़ी ज़मीन से फ़रमाई तो वह ज़रूर जमी हुई साकिन मुसतक़र है।

(ज) रब अज़्ज़ा व जल्ल ने सय्यिदुना मूसा अला नबीयीनल करीम व अलैहिस सलातो वस्सलाम से फ़रमाया,

لَنْ تَرٰىنِیْ وَ لٰكِنِ انْظُرْ اِلَى الْجَبَلِ فَاِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهٗ فَسَوْفَ تَرٰىنِیْ ۔

तुम हरगिज़ मुझे न देखोगे हाँ पहाड़ की तरफ़ देखो अगर वह अपनी जगह ठहरा रहे तो अनक़रीब तुम मुझे देख लोगे। फिर फ़रमाया,

فَلَمَّا تَجَلّٰى رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكًّا وَّ خَرَّ مُوْسٰى صَعِقًا ۔

जब उनके रब ने पहाड़ पर तजल्ली फ़रमाई उसे टुकड़े कर दिया और मूसा ग़श खाकर गिरे। क्या टुकड़े होकर दुनया से निकल गया या एशिया या उस मुल्क से। इस माना पर तो हरगिज़ जगह से न टला, हाँ वह ख़ास महल जिसमें जमा हुआ था वहाँ न जमा रहा तो मालूम

हुआ इसी क़दर अदम ए इसतिक़रार को काफ़ी है और ऊपर गुज़रा कि अदम ए इसतिक़रार ऐन ज़वाल है, ज़मीन भी जहाँ जमी हुई है वहाँ से सरके तो बेशक ज़ाइला होगी अगरचे दुनया या मदार से बाहर न जाए।

(द) इस आयत ए करीमा के नीचे तफ़सीर इरशादुल अक़्लुस सलीम में है,

و ان كان مكرهم فى غاية المتانة و الشدة معد الازالة الجبال عن مقارها ـ

नीशापुरी में है,

ازالة الجبال عن اماكنها ـ

ख़ाज़िन में है,

تزول عن اماكنها ـ

कश्शाफ़ में है,

تنقلع عن اماكنها ـ

मदारिक में है,

تنقطع عن اماكنها ـ

इसी के मिस्ल आपने कमालैन से नक़ल किया, यहाँ भी मकान व मक़र से क़त्अन वही क़रार है जो करीमा

فَاِنِ اسۡتَقَرَّ مَكَانَهُ

में था, इरशाद का इरशाद मक़ारिहा जाहा ए क़रार और कश्शाफ़ का लफ्ज़ तंक़लिओ ख़ास क़ाबिल ए लिहाज़ है कि उखड़ जाने ही को ज़वाल बताया।

(ह) सईद इब्न ए मंसूर अपने सुनन और इब्न ए अबी हातिम तफ़सीर में हज़रत अबू मालिक गज़वान ग़फ़्फ़ारी कूफ़ी उस्ताज़ ए इमाम सदी कबीर व तलमीज़ हज़रत अब्दुल्लाह इब्न ए अब्बास रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा से रावी,

وَ اِنۡ كَانَ مَكۡرُهُمۡ لِتَزُوۡلَ مِنۡهُ الۡجِبَالُ قال تحركت ۔

उन्होंने साफ़ तसरीह कर दी कि ज़वाल ए जिबाल उनका हरकत करना जुंबिश खाना है। इसी की ज़मीन से नफ़ी है व लिल्लाहिल हम्द।

(3) ऊपर गुज़रा कि ज़वाल मुक़ाबिल ए क़रार व सबात है और क़रार व सबात हक़ीक़ी सुकून ए मुतलक़ है, दरबारा ए क़रार इबारत ए इमाम राग़िब गुज़री और क़ामूस में है,

المثبت كمكرم من لاحراك به من المرض و بكسر الباء الذى
ثقل فلم يبرح الفراش و داء ثبات بالضم معجز عن الحركة ۔

मगर तवस्सुअन क़रार व सबात एक हालत पर बक़ा को कहते हैं अगरचे उसमें सुकून ए मुतलक़ न हो तो उसका मुक़ाबिल ज़वाल इसी हालत से इंफ़िसाल होगा यूँही मक़र व मुसतक़र व मकान हर जिस्म के लिए हक़ीक़ीही वह सतह या बोद ए मुजर्रद या मौहूम है जो

जमीअ जवानिब से उस जिस्म को हावी और उससे मुलासिक़ है यानी उलमा ए इस्लाम के नज़दीक वह फ़ज़ा ए मुत्तसिल जिसे यह जिस्म भरे हुए हैं ज़ाहिर है कि वह दबने, सरकने से बदल गई लिहाज़ा इस हरकत को हरकत ए ईनीया कहते हैं यानी जिससे दम ब दम ईं कि मकान व जाए का नाम है बदलता है यही जिस्म का मकान ए ख़ास है और इसी में क़रार व सबात ए हक़ीक़ी है इसके लिए यह भी ज़रुर है कि वज़ा भी न बदले, कुरह कि अपनी जगह क़ाइम रहकर अपने मिहवर पर घूमे मकान नहीं बदलता मगर उसे क़ार व सबात व साकिन न कहेंगे बल्कि ज़ाइल व हाइल व मुतहर्रिक फिर इसी तवस्सुअ के तौर पर बैत बल्कि दार बल्कि मुहल्ले बल्कि शहर बल्कि कसीर मुल्को के हावी हिस्सा ए ज़मीन मिस्ल एशिया बल्कि सारी ज़मीन बल्कि तमाम दुनया को मक़र व मुसतक़र व मकान कहते हैं,

قال تعالی وَ لَکُمۡ فِی الۡاَرۡضِ مُسۡتَقَرٌّ وَّ مَتَاعٌ اِلٰی حِیۡنٍ ۔

और उससे जब तक जुदाई न हो उसे क़रार व क़याम बल्कि सुकून से ताबीर करते हैं अगरचे हज़ारों हरकात पर मुशतमल हो व लिहाज़ा कहेंगे कि मोती बाज़ार बल्कि लाहौर बल्कि पंजाब बल्कि हिंदुस्तान बल्कि एशिया बल्कि ज़मीन हमारे मुजाहिद ए कबीर का मसकन है वह उनमें सुकूनत रखते हैं, वह उनके साकिन हैं हालांकि हर आक़िल जानता है कि सुकून व हरकत मुताबाइन मगर यह माना मजाज़ी हैं लिहाज़ा जा ए एतराज़ नहीं। ला जरम महल ए नफ़ी में उनका मुकाबिल ज़वाल भी उन्हीं की तरह मजाज़ी व तवस्सो है और वह न होगा जब तक उनसे इंतिक़ाल न हो, कुफ़्फ़ार की वह क़िस्म कि

مَا لَكُمْ مِنْ زَوَالٍ ۔

इसी माना पर थी, यह क़सम न खाते थे कि हम साकिन ए मुतलक़ हैं चलते फिरते नहीं, न यह कि हम एक शहर या मुल्क के पाबंद हैं उससे मुंतक़िल नहीं हो सकते बल्कि दुनया की निस्बत क़सम खाते थे कि हमें यहाँ से आख़िरत में जाना नहीं,

اِنْ هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَ نَحيَا وَ مَا نَحنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ۔

मौला तआला फ़रमाता है,

وَ اَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَا يَبْعَثُ اللّٰهُ مَنْ يَّمُوْتُ ۔

ला जरम तीसरी आयत ए करीमा में ज़वाल से मुराद दुनया से आख़िरत में जाना है, न यह कि दुनया में उनका चलना फिरना ज़वाल नहीं क़त्अन हक़ीक़ी ज़वाल है जिसकी सनदें ऊपर सुन चुके और अज़ीम शाफ़ी बयान आगे आता है मगर यहाँ उसका ज़िक्र है जिसकी वह क़सम खाते थे और वह न था मगर दुनया से इंतिक़ाल माना मजाज़ी के लिए क़रीना दरकार होता है यहाँ क़रीना उनके यही अक़वाल ए बि ऐनिही हैं बल्कि ख़ुद उसी आयत ए सद्र में क़रीना सरीहा मक़ालिया मौजूद कि रोज़ ए क़यामत ही के सवाल व जवाब का ज़िक्र फ़रमाता है,

وَ اَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَاْتِيْهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رَبَّنَآ
اَخِّرْنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ نُّجِبْ دَعْوَتَكَ وَ نَتَّبِعِ الرُّسُلَ اَوَ لَمْ
تَكُوْنُوْا اَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِّنْ زَوَالٍ ۔

लेकिन करीमा

اِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ اَنْ تَزُوْلَا ۔

में कोई क़रीना नहीं तो माना मजाज़ी लेना किसी तरह जाइज़ नहीं हो सकता बल्कि क़त्अन ज़वाल अपने माना ए हक़ीक़ी पर रहेगा यानी क़रार व सबात व सुकून ए हक़ीक़ी का छोड़ना, इसकी नफ़ी है तो ज़रूर सुकून का इस्बात है एक जगह माना मजाज़ी में इस्तेमाल देखकर दूसरी जगह बिला क़रीना मजाज़ मुराद लेना हरगिज़ हलाल नहीं।

(4) नहीं नहीं बिला क़रीना नहीं बल्कि ख़िलाफ़ ए क़रीना, यह और सख़्त तर है कि कलाम उल्लाह में पूरी तहरीफ़ ए मानवी का पहलू देगा, रब अज़्ज़ा व जल्ल ने

يُمْسِكُ

फ़रमाया है और इमसाक रोकना, थामना, बंद करना है व लिहाज़ा जो ज़मीन के पानी को बहने न दे रोक रखे उसे मसक और मसाक कहते हैं अनहार व अबहार को नहीं कहते हालांकि उनमें भी पानी की हरकत वहीं तक होगी जहाँ तक अहसनुल ख़ालिक़ीन जल्ल व अला ने उसका इमकान दिया है। क़ामूस में है,

امسكه حبسه المسك محركة الموضع يمسك الماء كالمساك كسحاب ۔

यूँ तो दुनया भर में कोई हरकत कभी भी ज़वाल न हो कि जहाँ तक अहसनुल ख़ालिक़ीन तआला ने इमकान दिया है उससे आगे नहीं बढ़ सकती।

(5) अगर इन माना को मजाज़ी न लीजिए बल्कि कहिए कि ज़वाल आम है मकान व मुसतक़र हक़ीक़ी ख़ास से सरकना और मौक़ा ए आम और मूतिन अअम और अअम अज़ अअम से जुदा होना सब उसके फ़र्द हैं तो हर एक पर उसका इतलाक़ हक़ीक़त है जैसे ज़ैद व अम्र व बक्र वग़ैरहुम किसी फ़र्द को इंसान कहना तो अब भी क़ुरआन ए करीम का मफ़ाद ज़मीन का वही सुकून ए मुतलक़ होगा न कि अपने मदार से बाहर न जाना।

تَزُوْلَا

फ़ेल है और महल ए नफ़ी में वारिद है और इल्म ए उसूल में मुसर्रह है कि फ़ेल क़ुव्वत ए नकरा मे है और नकरा हय्यिज़ नफ़ी में आम होता है तो माना ए आयत यह हुए कि आसमान व ज़मीन को किसी क़िस्म का ज़वाल नहीं, न मौक़ा ए आम से न मुसतक़र ए हक़ीक़ी ख़ास से और यही सुकून ए हक़ीक़ी है व लिल्लाहिल हम्द।

यही वजह है कि हमारे मुजाहिद ए कबीर को अपनी इबारत में हर जगह क़ैद बढ़ानी पड़ी "ज़मीन का अपने अमाकन से ज़ाइल हो जाना उसका ज़वाल होगा" ज़ाइल हो जाना क़त्अन मुतलक़न ज़वाल है, ज़ाइल हो जाना ज़वाल का तरजिमा ही तो है, मकान ए ख़ास से हो ख़वाह अमाकन से मगर अव्वल के इख़राज को इस क़ैद की हाजत होती तो यूँही फ़रमाया "ज़मीन का ज़वाल उसके अमाकन से" फिर फ़रमाया "जिन अमाकन में अल्लाह तआला ने उसको इमसाक दिया

है उससे बाहर सरक नहीं सकती" फिर फ़रमाया "अपने मदार में इमसाक कर्दा शुदा है उससे ज़ाइल नहीं हो सकती" और नफ़ी की जगह फ़रमाया "हज़रत अब्दुल्लाह इब्न ए मसऊद रदि अल्लाहु तआला अन्हु ने आसमान के सुकून फ़ी मकानिही की तसरीह फ़रमा दी मगर ज़मीन के बारे में ऐसा नहीं फ़रमाया" यहाँ जमा अमाकन का ज़ाहिर कर दिया मगर रब अज़्ज़ा व जल्ल ने तो उनमें कोई क़ैद न लगाई, मुतलक़

يُمْسِكُ

फ़रमाया है और मुतलक़

اَنْ تَزُوْلَا ۔

अल्लाह आसमान व ज़मीन हर एक को रोके हुए है कि सरकने न पाए, यह न फ़रमाया कि उसके मदार में रोके हुए है, यह न फ़रमाया कि हर एक के लिए अमाकन ए अदीदा हैं, उन अमाकन से बाहर न जाने पाए। तो इसका बढ़ाना कलाम ए इलाही में अपनी तरफ़ से पैवंद लगाना होगा अज़ पेश ख़ेश क़ुरआन ए अज़ीम के मुतलक़ को मुक़ैय्यद, आम को मुख़स्सस बनाना होगा और यह हरगिज़ रवा नहीं। अहले सुन्नत का अक़ीदा है जो उनकी कुतुब ए अक़ाइद में मुसर्रह है कि

النصوص تحمل علی ظواھرھا۔

बल्कि तमाम दलालतों का बड़ा फाटक यही है कि बतौर ए ख़ुद नुसूस को ज़ाहिर से फेरें, मुतलक़ को मुक़ैय्यद, आम को मुख़स्सस करें।

مَا لَكُمْ مِنْ زَوَالٍ

की तख़सीस ए वाज़ेह से

اَنْ تَزُوْلَا

को भी मुख़स्सस कर लेना इसकी नज़ीर यही है कि

اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ

की तख़सीस देखकर

اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ

को भी मुख़स्सस मान लें कि जिस तरह वहाँ ज़ात व सिफ़ात व मुहालात ज़ेर ए क़ुदरत नहीं यूँही मुआमला साफ़ हो गया कि ज़ात व सिफ़ात व मुहालात का मआज़ अल्लाह इल्म भी नहीं। ज़्यादा तशफ़्फ़ी बिहम्दिहि तआला नम्बर 8 में आती है जिससे वाज़ेह हो जाएगा कि अल्लाह व रसूल व सहाबा व मुस्लिमीन के कलाम में यहाँ माना ख़ास महल ए निज़ाअ में ज़वाल से मुतलक़न एक जगह से सरकना मुराद हुआ है अगरचे अमाकन मुएय्यना से बाहर न जाए या ज़वाल ए कुफ़्फ़ार की तरह दुनया ख़्वाह मदार छोड़कर अलग भाग जाना।

فانتظر ۔

(6) ला जरम वह जिन्होंने ख़ुद साहिब ए क़ुरआन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से क़ुरआन ए करीम पढ़ा, ख़ुद हुज़ूर ए

अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से उसके मआनी सीखे उन्होंने आयत ए करीमा को हर गूना ज़वाल की नाफ़ी और सुकून ए मुतलक़ हक़ीक़ी की मुस्बत बताया। सईद इब्न ए मंसूर व अब्द इब्न ए हुमैद व इब्न ए जरीर व इब्नुल मुंज़िर ने हज़रत शक़ीक़ इब्न सलमा से कि ज़माना ए रिसालत पाए हुए थे रिवायत की और हदीस इब्न ए जरीर ब रिजाल ए सहीहैन बुख़ारी व मुस्लिम है,

حدثنا ابن بشار ثنا عبد الرحمن ثنا سفين عن الاعمش عن ابی وائل قال جاء رجل الی عبد اللہ رضی اللہ تعالی عنہ فقال من این جئت قال من الشام فقال من لقیت قال لقیت کعباً فقال ما حدثك کعب قال حدثنی ان السمٰوت تدور علی منکب ملك قال فصدقتہ او کذبتہ قال ما صدقتہ و لا کذبتہ قال لوددت انك افتدیت من رحلتك الیہ براحلتك و رحلھا و کذب کعب ان اللہ یقول اِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ اَنْ تَزُوْلَا وَ لَئِنْ زَالَتَآ اِنْ اَمْسَكَهُمَا مِنْ اَحَدٍ مِنْ بَعْدِهٖ ۔ زاد غیر ابن جریر و کفی بھا زوالا ان تدورا ۔

एक साहिब हज़रत सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्न ए मसऊद रदि अल्लाहु तआला अन्हु के हुज़ूर हाज़िर हुए, फ़रमाया, कहाँ से आए। अर्ज़ की, शाम से। फ़रमाया, वहाँ किस से मिले। अर्ज़ की, काब से। फ़रमाया, काब ने तुमसे क्या बात की। अर्ज़ की, यह कहा कि आसमान एक फ़रिशते के शाने पर घूमते हैं। फ़रमाया, तुमने इसमें

काब की तस्दीक़ की या तकज़ीब। अर्ज़ की, कुछ नहीं (यानी जिस तरह हुक्म है कि जब तक अपनी किताब ए करीम का हुक्म न मालूम हो अहले किताब की बातों को न सच जानों न झूट) हज़रत अब्दुल्लाह इब्न ए मसऊद रदि अल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया, काश तुम अपना ऊंट और उसका कुजावा सब अपने इस सफ़र से छुटकारे को दे देते, काब ने झूट कहा, अल्लाह तआला फ़रमाता है, बेशक अल्लाह तआला आसमानों और ज़मीन को रोके हुए है कि सरकने न पाएं और अगर वह हटें तो अल्लाह के सिवा उन्हें कौन थामे, घूमना उनके सरक जाने को बहुत है। नीज़ मुहम्मद तबरी ने ब सनद ए सहीह बर उसूल ए हनफ़िया ब रिजाल ए बुख़ारी व मुस्लिम हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा के उस्ताज़ुल उस्ताज़ इमाम अजल्ल इब्राहीम नख़्ई से रिवायत की,

حدثنا جریر عن مغیرة عن ابراہیم قال ذهب جندب البجلی
الی کعب الاحبار فقدم علیه ثم رجع فقال له عبد الله حدثنا
ما حدثك فقال حدثنی ان السماء فی قطب کقطب الرحا و
القطب عمود علی منکب ملك قال عبد الله لوددت انك افتدیت
رحلتك بمثل راحلتك ثم قال ماتنتكت الیهودیة فی قلب عبد
فکادت تفارقه ثم قالا اِنَّ اللّٰهَ یُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ اَنْ تَزُوْلَا
۔ کفی بها زوالا ان تدورا ۔

जुंदुब बजली काब अहबार के पास जाकर वापस आए, हज़रत अब्दुल्लाह रदि अल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया, कहो काब ने तुमसे क्या कहा। अर्ज़ की, कहा कि आसमान चक्की की तरह एक कीली

में है और कीली एक फ़रिश्ते के कांधे पर है। हज़रत अब्दुल्लाह ने फ़रमाया, मुझे तमन्ना हुई कि तुम अपने नाक़ा के बराबर माल देकर इस सफ़र से छूट गए होते, यहूदियत की ख़राश जिस दिल में लगती है फिर मुश्किल ही से छूटती है, अल्लाह तो फ़रमा रहा है बेशक अल्लाह आसमानों और ज़मीन को थामे हुए है कि न सरकें, उनके सरकने को घूमना ही काफ़ी है।

अब्द इब्न ए हुमैद ने क़तादा शागिर्द ए हज़रत ए अनस रदि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की,

ان کعبا کان یقول ان السماء تدور علی نصب مثل نصب الرحا
فقال حذیفة بن الیمان رضی اللہ تعالی عنهما کذب کعب اِنَّ اللّٰهَ
یُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ اَنْ تَزُوْلَا ۔

काब कहा करते कि आसमान एक कीली पर दौरा करता है जैसे चक्की की कीली। इस पर हुज़ैफ़ा इब्नुल यमान रदि अल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया काब ने झूट कहा, बेशक अल्लाह आसमानों और ज़मीन को रोके हुए है कि जुंबिश न करें। देखो इन अजिल्ला ए सहाबा इकराम रदि अल्लाहु तआला अन्हुम ने मुतलक़ हरकत को ज़वाल माना और इस पर इंकार फ़रमाया और क़ाइल की तकज़ीब की और इसे बक़ाया ए ख़यालात ए यहूदियत से बताया, क्या वह इतना न समझ सकते थे कि हम काब की नाहक़ तकज़ीब क्यों फ़रमाएं, आयत में तो ज़वाल की नफ़ी फ़रमाई है "और उनका यह फिरना चलना अपने अमाकन में है जहाँ तक अहसनुल ख़ालिक़ीन तआला ने उनको हरकत का इमकान दिया है वहाँ तक उनका हरकत

करना उनका ज़वाल न होगा" मगर उनका ज़हन मुबारक इस माना ए बातिल की तरफ़ न गया, न जा सकता था बल्कि उसके इब्ताल ही की तरफ़ गया और जाना ज़रुर था कि अल्लाह तआला ने मुतलक़न ज़वाल की नफ़ी फ़रमाई है न कि ख़ास ज़वाल अनिल मदार की तो उन्होंने रवा न रखा कि कलाम ए इलाही में अपनी तरफ़ से यह पैवंद लगा लें, ला जरम उस पर रद फ़रमाया और इस क़दर शदीद व अशद फ़रमाया व लिल्लाहिल हम्द।

तम्बीह : काब अहबार ताबाईन ए अख़यार से हैं, ख़िलाफ़त ए फ़ारुक़ी में यहूदी से मुसलमान हुए, कुतुब ए साबिक़ा के आलिम थे, अहले किताब की अहादीस अक्सर बयान करते, उन्हीं में से यह ख़याल था जिसकी तग़लीत इन अकाबिर सहाबा ने क़ुरआन ए अज़ीम से फ़रमा दी तो क़ज़बा काब के यह माना हैं कि काब ने ग़लत कहा न कि मआज़ अल्लाह क़स्दन झूट कहा। क़ज़बा ब माना अख़ता मुहावरा ए हिजाज़ है और ख़राश ए यहूदियत ब मुश्किल छूटने से यह मुराद कि उनके दिल में इल्म ए यहूद भरा हुआ था, वह तीन क़िस्म है, बातिल सरीह व हक़ सरीह और मशकूक कि जब तक अपनी शरीअत से उसका हाल न मालूम हो, हुक्म है कि उसकी तस्दीक़ न करो, मुमकिन कि उनकी तहरीफ़ात या ख़ुराफ़ात से हो, न तकज़ीब करो, मुमकिन कि तौरेत या तालीमात से हो, इस्लाम लाकर क़िस्म ए अव्वल का हर्फ़-हर्फ़ क़त्अन उनके दिल से निकल गया, क़िस्म ए दुवम का इल्म और मुसज्जल हो गया, यह मसअला क़िस्म ए सुवम बक़ाया ए इल्म ए यहूद से जिसके बुतलान पर आगाह न होकर उन्होंने बयान किया और सहाबा ए किराम ने क़ुरआन ए अज़ीम से इसका बुतलान ज़ाहिर

फ़रमा दिया यानी यह न तौरेत से है न तालीमात से बल्कि उन ख़बीसों की ख़ुराफ़ात से। ताबाईन सहाबा ए किराम के ताबेअ व ख़ादिम हैं, मख़्दूम अपने ख़ुद्दाम को ऐसे अलफ़ाज़ से ताबीर कर सकते हैं और मतलब यह है जो हमने वाज़ेह किया व लिल्लाहिल हम्द।

(7) इस सारी तहरीर में मुझे आपसे इस फ़िक़रे का ज़्यादा ताज्जुब हुआ कि "हज़रत अब्दुल्लाह इब्न ए मसऊद रदि अल्लाहु तआला अन्हु ने आसमान के सुकून फ़ी मकानिही की तसरीह फ़रमा दी मगर ज़मीन के बारे में ऐसा न फ़रमाया, ख़ामोशी फ़रमाई" इसे आपने अपनी मुश्किल का हल तसव्वुर किया। काब अहबार ने आसमान ही का घूमना बयान किया था और यहूद इसी क़दर के क़ाइल थे, ज़मीन को वह भी साकिन मानते थे बल्कि 1530 से पहले (जिसमें कोपरनिकस ने हरकत ए ज़मीन की बिदअत ए दाल्ला को कि दो हज़ार बरस से मुर्दा पड़ी थी, जिलाया) नसारा भी सुकून ए अर्द ही के क़ाइल थे। इसी क़दर यानी सिर्फ़ दौरा ए आसमान का इन हज़रात ए आलियात के हुज़ूर तज़किरा हुआ, उसकी तकज़ीब फ़रमा दी, दौरा ए ज़मीन कहा किसने था कि उसका रद फ़रमाते अगर कोई सिर्फ़ ज़मीन का दौरा कहता सहाबा इसी आयत ए करीमा से उसकी तकज़ीब करते और अगर कोई आसमान व ज़मीन दोनों का दौरा बताता, सहाबा इसी आयत से दोनों का इब्ताल फ़रमाते, जवाब ब क़दर ए सवाल देख लिया, यह न देखा कि जिस आयत से वह सनद लाए उसमें आसमान व ज़मीन दोनों का ज़िक्र है या सिर्फ़ आसमान का, आयत पढ़िए सराहतन दोनों एक हालत पर मज़कूर हैं, दोनों पर एक ही हुक्म है। जब हस्ब ए इरशाद ए सहाबा आयत ए करीमा

मुतलक़ हरकत का इंकार फ़रमाती है और वह इंकार आसमान व ज़मीन दोनों के लिए एक नस्क़ एक लफ्ज़

اَنْ تَزُوْلَا

में है जिसकी ज़मीर दोनों की तरफ़ है तो क़त्अन आयत ने ज़मीन की भी हर गूना हरकत को बातिल फ़रमाया जिस तरह आसमान की। एक शख़्स कहे हज़रत सय्यिदुना युसुफ़ अलैहिस सलातो वस्सलाम ने आफ़ताब को अपने लिए सज्दा करते न देखा था, इस पर आलिम फ़रमाए, वह झूटा है, आयत ए करीमा में है,

اِنِّیْ رَاَیْتُ اَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَّ الشَّمْسَ وَ الْقَمَرَ رَاَیْتُهُمْ لِیْ سٰجِدِیْنَ

मैंने ग्यारह सितारों और सूरज और चाँद को अपने लिए सज्दा करते देखा। इसके बाद एक दूसरा शख़्स उठे और चाँद को साजिद देखने से मुंकिर हो और कहे क़ुरबान जाइए आलिम ने सूरज के सज्दा की तसरीह फ़रमाई मगर चाँद के बारे में ऐसा न फ़रमाया, ख़ामोशी फ़रमाई। उसे क्या कहा जाएगा। अब तो आपने ख़याल फ़रमा लिया होगा कि क़ाइल ए हरकत ए अर्द को अजिल्ला ए सहाबा ए किराम बल्कि ख़ुद साफ़ ज़ाहिर नस ए क़ुरआन ए अज़ीम से गुरेज़ के सिवा कोई चारा नहीं और यह मआज़ अल्लाह ख़ुसरानुम मुबीन है जिससे अल्लाह तआला हमें और आप और सब अहले सुन्नत को बचाए, आमीन।

(8) अजब कि आपने आफ़ताब का ज़वाल न सुना, इसे तो मैंने आपसे बिलमुशाफ़ा कह दिया था।

(अ) हदीसों में कितनी जगह

زالت الشمس

है बल्कि क़ुरआन ए अज़ीम में है,

اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوْكِ الشَّمْسِ ۔

तफ़सीर इब्न ए मरदविया में अमीरुल मोमिनीन उमर रदि अल्लाहु तआला अन्हु से है नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने

لِدُلُوْكِ الشَّمْسِ

की तफ़सीर में फ़रमाया,

لزوال الشمس ۔

इब्न ए जरीर ने अब्दुल्लाह इब्न ए मसऊद रदि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया,

اتانی جبرئیل لدلوك الشمس حین زالت فصلی بی الظهر ۔

नीज़ अबू हुरैरा रदि अल्लाहु तआला अन्हु से,

كان رسول الله صلى الله تعالى علیه وسلم یصلی الظهر اذا زالت الشمس ثم تلا اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوْكِ الشَّمْسِ ۔

नीज़ मिस्ल सईद इब्न ए मंसूर अब्दुल्लाह इब्न ए अब्बास रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा से

دلوكها زوالها ۔

बज़्ज़ार व अबू शेख़ व इब्न ए मरदविया ने अब्दुल्लाह इब्न ए उमर रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा से

دلوك الشمس زوالها ۔

अब्दुर रज़्ज़ाक़ ने मुसन्निफ़ में अबु हुरैरा रदि अल्लाहु तआला अन्हु से

دلوك الشمس اذا زالت عن بطن السماء ۔

मजमा ए बिहारुल अनवार में है,

زاغت الشمس مالت و زالت علی اعلی درجات ارتفاعها ۔

फ़िक़्ह में वक़्त ए ज़वाल हर किताब में मज़कूर और अवाम तक की ज़बानों पर मशहूर। क्या उस वक़्त आफ़ताब अपने मदार से बाहर निकल जाता है और अहसनुल ख़ालिक़ीन जल्ल व अला ने जहाँ तक हरकत का उसे इमकान दिया है उससे आगे पांव फैलाता है। हाशा मदार ही में रहता है और फिर ज़वाल हो गया। यूँही ज़मीन अगर दौरा करती ज़रूर उसे ज़वाल होता अगरचे मदार से न निकलती, इस पर अगर यह ख़याल जाए कि एक जगह से दूसरी जगह सरकना तो आफ़ताब को हर वक़्त है फिर हर वक़्त को ज़वाल क्यों नहीं कहते तो यह महज़ जाहिलाना सवाल होगा।

वजह ए तसमिया मुत्तारिद नहीं होती। कुतुब में यह मशहूर हिकायत है कि मुत्तारिद मानने वाले से पूछा जिरजीर यानी चीने को कि एक क़िस्म का अनाज है जिरजीर क्यों कहते हैं। कहा,

لانه يتجرجر على الارض ۔

इसलिए कि वह ज़मीन पर जुंबिश करता है। कहा, तुम्हारी दाढ़ी को जिरजीर क्यों नहीं कहते, यह भी तो जुंबिश करती है। क़ारूरे को क़ारूरा क्यों कहते हैं। कहा,

لان الماء يقر فيها ۔

इसलिए कि उसमें पानी ठहरता है। कहा, तुम्हारे पेट को क़ारूरा क्यों नहीं कहते, उसमें भी तो पानी ठहरता है। यहाँ तीन ही मौज़ा मुमताज़ थे उफ़क़ ए शर्क़ी व ग़र्बी व दाइरा ए निस्फ़ुन नहार, उनसे सरकने का नाम तुलूअ व ग़ुरूब रखा कि यही अंसब व वजह ए तमाइज़ था और उससे तजावुज़ को ज़वाल कहा अगरचे जगह से ज़वाल आफ़ताब को बिला शुबह हर वक़्त है, करीमा,

وَ الشَّمْسُ تَجْرِیْ لِمُسْتَقَرٍ لَّهَا

में अब्दुल्लाह इब्न ए मसऊद रदि अल्लाहु तआला अन्हु की क़िराअत है,

لَا مُسْتَقَرٍ لَّهَا

यानी सूरज चलता है किसी वक़्त उसे क़रार नहीं। ऊपर गुज़रा कि क़रार का मुक़ाबिल ज़वाल है, जब किसी वक़्त क़रार नहीं तो हर

वक़्त ज़वाल है अगरचे तस्मीया में एक ज़वाल ए मुअय्यन का नाम ज़वाल रखा, ग़र्ज़ कलाम इसमें है कि अहादीस ए मरफ़ूआ सय्यिद ए आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम व आसार ए सहाबा ए किराम व इज्मा अहले इस्लाम ने आफ़ताब का अपने मदार में रहकर एक जगह से सरकने को ज़वाल कहा अगर ज़मीन मुतहर्रिक होती तो यक़ीनन एक जगह से उसका सरकना ही ज़वाल होता अगरचे मदार से बाहर न जाती लेकिन क़ुरआन ए अज़ीम ने साफ़ इरशाद में उसके ज़वाल का इंकार फ़रमाया है तो क़तअन वाजिब कि ज़मीन असलन मुतहर्रिक न हो।

(ब) बल्कि ख़ुद यही ज़वाल कि क़ुरआन व हदीस व फ़िक़्ह व ज़बान ए जुमला मुसलिमीन सबमें मज़कूर क़ाइलान ए दौरा ए ज़मीन उसे ज़मीन ही का ज़वाल कहेंगे कि वह हरकत ए यौमिया उसी की जानिब मंसूब करते हैं यानी आफ़ताब यह हरकत नहीं करता बल्कि ज़मीन अपने मिहवर पर घूमती है जब वह हिस्सा जिस पर हम हैं घूमकर आफ़ताब से आड़ में हो गया रात हुई जब घूमकर आफ़ताब के सामने आया कहते हैं आफ़ताब ने तुलूअ किया हालांकि ज़मीन यानी उस हिस्सा ए अर्द ने जानिब ए शम्स रुख़ किया जब इतना घूमा कि आफ़ताब हमारे सरों के मुहाज़ी हुआ यानी हमारा दाइरा निस्फ़ुन नहार मरकज़ ए शम्स के मुक़ाबिल आया दोपहर हो गया जब ज़मीन यहाँ से आगे बढ़ी दोपहर ढल गया, कहते हैं कि आफ़ताब को ज़वाल हुआ हालांकि ज़मीन को हुआ, यह उनका मज़हब है और सराहतन क़ुरआन ए अज़ीम का मुकज़्ज़िब व मुकज़्ज़ब है। मुसलिमीन तो मुसलिमीन, बेरूत वग़ैरह के सुफ़हा ए क़ाइलान ए हरकत ए अर्द भी

जिनकी ज़बान अरबी है उस वक़्त को वक़्त ए ज़वाल और धूप घड़ी को मिज़वला कहते हैं यानी ज़वाल पहचानने का आला। और अगर उनसे कहिए क्या शम्स ज़वाल करता है। कहेंगे नहीं बल्कि ज़मीन हालांकि वह मदार से बाहर न गई। तो आपकी तावील मुवाफ़िक़ीन व मुख़ालिफ़ीन किसी को भी मक़बूल नहीं (ज) औरों से क्या काम, आप तो बिफज़्लिहि तआला मुसलमान हैं, इब्तिदा ए वक़्त ए ज़ोहर ज़वाल से जानते हैं, क्या हज़ार बार न कहा होगा कि ज़वाल का वक़्त है, ज़वाल होने को है, ज़वाल हो गया। काहे से ज़वाल हुआ, दाइरा ए निस्फ़ुन नहार से, किसका ज़वाल हुआ, आपके नज़दीक ज़मीन का कि उसी की हरकत ए मिहवरी से हुआ हालांकि अल्लाह तआला अज़्ज़ा व जल्ल फ़रमाता है कि ज़मीन को ज़वाल नहीं, अब ख़ुद मानकर कि ज़मीन मुतहर्रिक हो तो रोज़ाना अपने मदार के अंदर ही रहकर उसे ज़वाल होता है, दुनया से ज़वाल ए कुफ़्फ़ार पेश करने का क्या मौक़ा रहा। इंसाफ़ शर्त है और क़ुरआन ए अज़ीम के इरशाद पर ईमान लाज़िम व बिल्लाहित तौफ़ीक़। (द) यहाँ से बिहम्दिहि तआला हज़रत मुअल्लिमुत तहियात रदि अल्लाहु तआला अन्हु के इस इरशाद की ख़ूब तौज़ीह हो गई कि सिर्फ़ हरकत ए मिहवरी ज़वाल को बस है।

(9) बिहम्दिहि तआला तीन आयतें यह गुज़री,

आयत 1 :

اِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ ۔

आयत 2 :

وَ لَئِنْ زَالَتَآ ۔

आयत 3 :

لِدُلُوْكِ الشَّمْسِ ۔

आयत 4 :

فَلَمَّآ اَفَلَت ۔

आयत 5 :

وَ سَبِح بِحَمْدِ رَبِكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَ قَبْلَ الْغُرُوْبِ ۔

आयत 6 :

وَ سَبِح بِحَمْدِ رَبِكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَ قَبْلَ غُرُوْبِهَا ۔

आयत 7 :

حَتّٰى اِذَا بَلَغَ مَطلِعَ الشَّمسِ وَجَدَهَا تَطلُعُ عَلٰى قَوْمٍ لَّمْ نَجعَلْ لَّهُمْ مِنْ دُوْنِهَا سِترًا ۔

आयत 8 :

وَ تَرَى الشَّمْسَ اِذَا طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَ اِذَا غَرَبَت تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِمَالِ وَ هُمْ فِىْ فَجْوَةٍ مِنْهُ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ ۔

तू आफ़ताब को देखेगा जब तुलूअ करता है उनके ग़ार से दहनी तरफ़ माइल होता है और जब डूबता है उनसे बाईं तरफ़ कतरा जाता

है हालांकि वह ग़ार के खुले मैदान में हैं, यह क़ुदरत ए इलाही की निशानियों में है। यूँही सद्हा अहादीस इरशाद ए सय्यिद ए आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ख़ुसूसन हदीस ए सहीह बुख़ारी और अबू ज़र रदि अल्लाहु तआला अन्हु,

قال النبی صلی اللہ تعالی علیہ لابی ذر حین غربت الشمس اتدری این تذھب قلت اللہ و رسولہ اعلم قال فانھا تذھب حتی تسجد تحت العرش فتستأذن فیؤذن لھا و یوشك ان تسجد فلا یقبل منھا و تستأذن فلا یؤذن لھا یقال لھا ارجعی من حیث جئت فتطلع من مغربھا فذلك قولہ تعالی وَ الشَّمۡسُ تَجۡرِیۡ لِمُسۡتَقَرٍ لَّھَا ذٰلِكَ تَقۡدِیۡرُ الۡعَزِیۡزِ الۡعَلِیۡمِ ۔

यूँही हज़ारहा आसार ए सहाबा इज़ाम व ताबाईन ए किराम व इज्मा ए उम्मत जिन सबमें ज़िक्र है कि आफ़ताब तुलूअ व ग़ुरूब करता है, आफ़ताब को वस्त समा में ज़वाल होता है, आफ़ताब की तरह रौशन दलाइल हैं कि ज़मीन साकिन महज़ है बदीही है और ख़ुद मुख़ालिफ़ीन को तसलीम कि तुलूअ व ग़ुरूब व ज़वाल नहीं मगर हरकत ए यौमिया से तो जिसके यह अहवाल हैं हरकत ए यौमिया उसी की हरकत है तो क़ुरआन ए अज़ीम व अहादीस ए मुतवातिरा व इज्मा ए उम्मत से साबित कि हरकत ए यौमिया हरकत ए शम्स है न कि हरकत ए ज़मीन लेकिन अगर ज़मीन हरकत करती तो हरकत ए यौमिया उसी की हरकत होती जैसा कि मज़ऊम ए मुख़ालिफ़ीन है तो रौशन हुआ कि ज़ोम ए साइंस बातिल व मरदूद है। फिर शम्स की

हरकत ए यौमिया जिससे तुलूअ व ग़ुरूब व ज़वाल है, न होगी मगर यूँ कि वह गिर्द ए ज़मीन दौरा करता है तो क़ुरआन व हदीस व इज्मा से साबित हुआ कि आफ़ताब हौल ए अर्द ए दाइरा है, ला जरम ज़मीन मदार ए शम्स के जौफ़ में है तो नामुमकिन है कि ज़मीन गिर्द ए शम्स दौरा करे और आफ़ताब मदार ए ज़मीन के जौफ़ में हो तो बिहम्दिल्लाहि तआला आयात ए मुताकासिरा व अहादीस ए मुतावातिरा व इज्मा ए उम्मत ए ताहिरा से वाज़ेह हुआ कि ज़मीन की हरकत ए मिहवरी व मदारी दोनों बातिल हैं व लिल्लाहिल हम्द। ज़्यादा से ज़्यादा मुख़ालिफ़ यहाँ यह कह सकता है कि ग़ुरूब तो हक़ीक़तन शम्स के लिए है कि वह ग़ीबत है और आफ़ताब ही इस हरकत ए ज़मीन के बाइस निगाह से ग़ायब होता है और ज़वाल हक़ीक़तन ज़मीन के लिए है कि यह हटती है न कि आफ़ताब और तुलूअ हक़ीक़तन किसी के लिए नहीं कि तुलूअ सऊद और ऊपर चढ़ना है। हदीस में है,

لکل حد مطلع ۔

निहाया व दुर ए नसीर व मजमउल बिहार व क़ामूस में है,

ای مصعد یصعد الیه من عرفة علمیه ۔

नीज़ सलासा उसूल ताजुल उरुस में है,

مطلع الجبل مصعدہ ۔

हदीस में है,

طلع المنبر ۔

मजमउल बिहार में है,

ای علاہ ۔

ज़ाहिर है कि ज़मीन आफ़ताब पर नहीं चढ़ती और मुख़ालिफ़ के नज़दीक आफ़ताब भी उस वक़्त ज़मीन पर न चढ़ा कि तुलूअ उसकी हरकत से नहीं ला जरम तुलूअ सिरे से बातिल महज़ है मगर मकान ए ज़मीन को हरकत ए ज़मीन महसूस नहीं होती, उन्हें वहम गुज़रता है कि आफ़ताब चलता, ढलता है लिहाज़ा तुलूअ व ज़वालुश शम्स कहते हैं, यह कोई काफ़िर कह सके, मुसलमान क्योंकर वह रवा रख सके कि जाहिलाना वहम जो लोगों को गुज़रता है क़ुरआन ए अज़ीम भी मआज़ अल्लाह इसी वहम पर चला है और वाक़ेअ के ख़िलाफ़ तुलूअ व ज़वाल को आफ़ताब की तरफ़ निस्बत फ़रमा दिया है वल इयाज़ु बिल्लाहि तआला। ला जरम मुसलमान पर फ़र्ज़ है कि हरकत ए शम्स व सुकून ए ज़मीन पर ईमान लाए वल्लाहुल हादी।

(10) सूरह ए ताहा व सूरह ए ज़ुख़रुफ़ दो जगह इरशाद हुआ है,

الَّذِیۡ جَعَلَ لَکُمُ الۡاَرۡضَ مَھۡدًا ۔

दोनों जगह सिर्फ़ कूफ़ियों मिस्ल इमाम आसिम ने जिन की क़िराअत हिंद में राइज है महदा पढ़ा, बाक़ी तमाम अइम्मा ए क़िराअत ने मिहादा ब ज़ियादत ए अलिफ़। दोनों के माना हैं बिछौना। जैसे फ़र्श व फ़िराश यूँही महद व मिहाद।

(अ) पस क़िराअत ए आम अइम्मा ने क़िराअत ए कूफ़ी तफ़सीर फ़रमा दी कि महद से मुराद फ़र्श है। मदारिक शरीफ़ सूरह ए ताहा में है,

(مهدا) كوفى وغيرهم مهادا و هما لغتان لما يبسط و يفرش ۔ (مهداً)

उसी की सूरह ए ज़ुख़रुफ़ में है,

(مهداً) كوفى وغيره مهاداً اى موضوع قرار ۔ (مهداً)

मुआलिम शरीफ़ में है,

قرأ اهل الكوفة مهداً هُهنا و فى الزخرف فيكون مصدرًا اى فرشاً و قرا الاخرون مهادا كقوله تعالى اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ مِهٰدًا اى فراشا و هو اسم ما يفرش كالبساط ۔

तफ़सीर इब्न ए अब्बास में दोनों जगह है,

مهدا (فراشا)

नीज़ यही मज़मून क़ुरआन ए अज़ीम की बहुत आयात में इरशाद है, फ़रमाता है,

اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ مِهٰدًا ۔

फ़रमाता है,

وَ الْاَرْضَ فَرَشْنٰهَا فَنِعمَ الْمٰهِدُوْنَ ۔ فرماتا ہے، وَ اللهُ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ بِسَاطًا ۔

फ़रमाता है,

الَّذِیْ جَعَلَ لَکُمُ الْاَرْضَ فِرَاشًا ۔

और क़ुरआन की बेहतर तफ़सीर वह है कि ख़ुद क़ुरआन ए करीम फ़रमाए।

(ब) बच्चे ही का महद हो तो वह क्या उसके बिछौने को नहीं कहते। जलालैन सूरह ए ज़ुख़रुफ़ में है,

مهاداً فراشاً كالمهد للصبى ۔

ला जरम हज़रत शेख़ सादी व शाह वली उल्लाह ने मिहादा का तरजिमा ताहा में फ़र्श और ज़ुख़रुफ़ में बिसात ही किया और शाह रफ़ीउद्दीन और शाह अब्दुल क़ादिर ने दोनों जगह बिछौना।

(ज) गहवारा ही लो तो उससे तशबीह आराम में होगी न कि हरकत में, ज़ाहिर कि ज़मीन अगर ब फ़र्ज़ ए बातिल जुंबिश भी करती तो उससे न साकिनों को नींद आती न गर्मी के वक़्त हवा लाती। तो गहवारा से उसे ब हैसियत ए जुंबिश मुशाबहत नहीं तो ब हैसियत ए आराम व राहत है। ख़ुद गहवारा से अस्ल मक़सद यही है, न कि हिलाना, तो वजह ए शुबह वही है न यह, ला जरम उसी को मुफ़स्सिरीन ने इख़्तियार किया।

(द) लुत्फ़ यह कि उलमा ने इस तशबीह ए महद से भी ज़मीन का सुकून ही साबित किया बिल्कुल नक़ीज़ उसका जो आप चाहते हैं। तफ़सीर ए कबीर में है

كون الارض مهدا انما حصل لاجل كونها واقفة ساكنة و لما كان المهد موضع الراحة للصبى جعل الارض مهدا لكثرة ما فيها من الراحات ۔

ख़ाज़िन में है,

جعل لكم الارض مهدا) معناه واقفة ساكنة يمكن الانتفاع بها و لما كان المهد موضع الراحة للصبى فلذلك سمى الارض مهادا لكثرة ما فيها من الراحة للخلق ۔

ख़तीब शिरबीनी फिर फ़ुतूहात ए इलाहिया में ज़ेर ए करीमा ए ज़ुख़रुफ़ है,

اى لو شاء لجعلها متحركة فلا يمكن الانتفاع بها فالانتفاع بها انما حصل لكونها مسطحة قارة ساكنة ۔

इस इरशाद ए उलमा पर कि ज़मीन मुतहर्रिक होती तो उससे इंतिफ़ाअ होता। कासा लीसान फ़लसफ़ा ए जदीदा को अगर यह शुबह लगे कि "उसकी हरकत महसूस नहीं" तो उनसे कहिए यह तुम्हारी हवस ए ख़ाम है। फ़ौज़ ए मुबीन देखिए हमने ख़ुद फ़लसफ़ा ए जदीदा के मुसल्लमात ए अदीदा से साबित किया है कि अगर ज़मीन मुतहर्रिक होती जैसा वह मानते हैं तो यक़ीनन उसकी हरकत हर वक़्त सख़्त ज़लज़ला और शदीद आँधियां लाती, इंसान, हैवान कोई उस पर न बस सकता। ज़बान से एक बात हाँक देना आसान है मगर उस पर जो क़ाहिर रद हों उनका उठाना हज़ारहा बांस पैराना है।

(11) दीबाचा में जो आपने दलाइल ए हरकत ए ज़मीन कुतुब ए अंग्रेज़ी से नक़ल फ़रमाए, अलहमदु लिल्लाह उनमें कोई नाम को ताम नहीं, सब पादिर हवा हैं। ज़िन्दगी बिल ख़ैर है तो आप इन शा अल्लाह तआला इन सबका रद ए बलीग़ फ़क़ीर की किताब फ़ौज़ ए मुबीन की फ़सल ए चहारुम में देखेंगे बल्कि वह आठ सतरें जो मैंने अव्वल में लिख दी हैं कि यूरोप वालों को तर्ज़ ए इस्तिदलाल असलन नहीं आता, उन्हें इस्बात ए दावा की तमीज़ नहीं, उनके औहाम जिनको बनाम ए दलील पेश करते हैं यह-यह इल्लतें रखते हैं। मुसन्निफ़ ज़ी फ़हम मुनाज़िरा दां के लिए वही उनके रद में बस हैं कि दलाइल भी उन्हीं इल्लतों के पाबंद ए हवस हैं और ब फ़ज़्लिहि तआला आप जैसे दीनदार व सुन्नी मुसलमान को तो इतना ही समझ लेना काफ़ी है कि इरशाद ए क़ुरआन ए अज़ीम व नबी करीम अलैहि अफ़ज़लुस सलातो वत् तसलीम व मसअला ए इस्लामी व इज्मा ए उम्मत ए गिरामी के ख़िलाफ़ क्योंकर कोई दलील क़ाइम हो सकती है, अगर बिल फ़र्ज़ उस वक़्त हमारी समझ में उसका रद न आए जब भी यक़ीनन वह मरदूद और क़ुरआन व हदीस व इज्मा सच्चे। यह है बिहम्दिल्लाहि शान ए इस्लाम।

मुहिब ए फ़क़ीर साइंस यूँ मुसलमान न होगी कि इस्लामी मसाइल को आयात व नुसूस में तावीलात दूर अज़कार करके साइंस के मुताबिक़ कर लिया जाए यूँ तो मआज़ अल्लाह इस्लाम ने साइंस क़बूल की न कि साइंस ने इस्लाम, वह मुसलमान होगी तो यूँ कि जितने इस्लामी मसाइल से उसे ख़िलाफ़ है सबमें मसअला ए इस्लामी को रौशन किया जाए, दलाइल ए साइंस को मरदूद व पामाल कर

दिया जाए, जा ब जा साइंस ही के अक़वाल से इस्लामी मसअला का इस्बात हो, साइंस का इब्ताल व इस्कात हो, यूँ क़ाबू में आएगी। और यह आप जैसे फ़हीम साइंसदां को बिइज़्निहि तआला दुशवार नहीं आप उसे ब चश्मे पसंद देखते हैं,

و عين الرضاء عن كل عيب كليلة ۔

उसके मआइब मख़्फ़ी रहते हैं, मौला अज़्ज़ा व जल्ल की इनायत और हुज़ूर सय्यिद ए आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की इआनत पर भरोसा करके उसके दआवी ए बातिला मुख़ालिफ़ा ए इस्लाम को ब नज़र ए तहक़ीर व मुख़ालिफ़त देखिए, उस वक़्त इन शा अल्लाहुल अज़ीज़ुल क़दीर उसकी मुलम्मा कारियां आप पर खुलती जाएंगी और आप जिस तरह अब देवबंदिया मख़्ज़ूलीन पर मुजाहिद हैं यूँही साइंस के मुक़ाबिल आप नुसरत ए इस्लाम के लिए तैयार हो जाएंगे कि

و لكن عين السخط تبدى المساويا ۔

मौलवी क़ुद्दिसा सिर्रुहुल मानवी फ़रमाते हैं,

दुश्मन ए राह ए ख़ुदा रा ख़वार दार ___ दुज़्द रा मिम्बर मुँह बरदार दार।

रब ए करीम बिजाहे नबी रऊफ़ रहीम अलैहि अफ़ज़लुस सलातो वत् तसलीम हमें और आप और हमारे भाइयों अहले सुन्नत ख़ादिमान ए मिल्लत को नुसरत ए दीन ए हक़ की तौफ़ीक़ बख़्शे और क़बूल फ़रमाए।

آمین الہ الحق اٰمین وَ اعفُ عَنَّا وَ اغْفِر لَنَا وَ ارحَمْنَا اَنْتَ مَوْلٰنَا فَانْصُرنَا عَلَى الْقَوْمِ الْکٰفِرِیْنَ ۔ الحمد للہ رب العلمین و صلی اللہ تعالی علی سیدنا و مولٰینا محمد و اٰلہ و صحبہ و ابنہ و حزبہ اجمعین اٰمین و اللہ تعالی اعلم ۔

العطایا النبویہ فی الفتاوی الرضویہ، جـ 12/12، صـ 273-289 و جـ30/27، صـ 195-228 ۔

تمت بالخیر

हिंदी ज़ुबान में हमारी दूसरी किताबें और रसाइल :

बहारे तहरीर (अब तक 13 हिस्सों में)
अल्लाह त'आला को ऊपरवाला या अल्लाह मियाँ कहना कैसा?
अज़ाने बिलाल और सूरज का निकलना
इश्क़े मजाज़ी - मुंतख़ब मज़ामीन का मजमुआ
गाना बजाना बंद करो, तुम मुसलमान हो!
शबे मेराज गौसे पाक
शबे मेराज नालैन अर्श पर
हज़रते उवैस क़रनी का एक वाकिया
डॉक्टर ताहिर और वक़ारे मिल्लत
ग़ैरे सहाबा में रदिअल्लाहु त'आला अन्हु का इस्तिमाल
चंद वाकियाते कर्बला का तहक़ीक़ी जाइज़ा
बिंते हव्वा
सेक्स नॉलेज
हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम के वाकिये पर तहक़ीक़
औरत का जनाज़ा
एक आशिक़ की कहानी अल्लामा इब्ने जौज़ी की ज़ुबानी
40 अहादीसे शफा'अत
हैज़, निफ़ास और इस्तिहाज़ा का बयान बहारे शरीअत से
क़ियामत के दिन लोगों को किस के नाम के साथ पुकारा जाएगा?
ज़न और यक़ीन

ABOUT US

Abde Mustafa Official Is A Team From **Ahle Sunnat Wa Jama'at**
Working **Since 2014** On The Aim To Propagate
Quraan And Sunnah
Through Electronic And Print Media.

We are :

Writing articles, composing & publishing books, running a special **matrimonial service** for Ahle Sunnat

Visit our official website

www.abdemustafa.in

Books Library

books.abdemustafa.in
about 100+ tehqeeqi pamphlets & books are available in multiple languages.

E Nikah Matrimony

www.enikah.in
there is also a channel on Telegram
t.me/Enikah (Search "E Nikah Service" on Telegram)

Find us on Social Media Networks :

Subscribe us on YouTube @abdemustafaofficial
like and follow us on Facebook & Instagram @abdemustafaofficial
Join our official Telegram Channel t.me/abdemustafaofficial
Books Library on Telegram t.me/abdemustafalibrary
or search "Abde Mustafa Official" on Google
for more details WhatsApp on **+919102520764**